CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीता-दैनन्दिनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५ गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस © (०५५१) २३३४७२१, फैक्स २३३६९९७
website : www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org

दिल्ली-११०००६ २६०९, नयी सड़क ©(०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०

कोलकाता- ७००००७ गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड, © (०३३) २२६८६८९४,
e-mail:gobindbhawan@gitapress.org; फैक्स (०३३) २२६८०२५१

मुम्बई-४००००२ २८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट)
मरीन लाइन्स स्टेशनके पास © (०२२) २२०७२६३६

कानपुर-२०८००१ २४/५५, बिरहाना रोड © (०५१२) २३५२३५१, फैक्स २३५२३५१

पटना-८००००४ अशोकराजपथ, बड़े अस्पतालके सामने © (०६१२) २६६२८७९

राँची-८३४००१ जे० जे० रोड, अपर बाजार © (०६५१) २२१०६८५

सूरत-३९५००१ वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड
e-mail: suratdukan@gitapress.org; © (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५

इन्दौर-४५२००१ जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग © (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७

हैदराबाद-५०००९६ ४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार © (०४०) २४७५८३११

नागपुर-४४०००२ श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड ©(०७१२) २७३४३५४

कटक-७५३००९ भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी © (०६७१) २३३५४८१

रायपुर-४९२००९ मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक (छत्तीसगढ़) ©(०७७१) ५०३४४३०

वाराणसी-२२१००१ ५९/९, नीचीबाग © (०५४२) २३५३५५१
e-mail:varanasidukan@gitapress.org

हरिद्वार-२४९४०१ सब्जीमण्डी, मोतीबाजार © (०१३३४) २२२६५७

ऋषिकेश-२४९३०४ गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम © (०१३५) २४३०१२२
e-mail:gitabhawan@gitapress.org २४३२७९२

स्टेशन-स्टाल — दिल्ली जंक्शन (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय जं० (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना जं० (मुख्य प्रवेशद्वार); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); समस्तीपुर (नं० २); हावड़ास्टेशन (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); राऊरकेला (पुस्तक-ट्राली); राजगांगपुर (पुस्तक-ट्राली); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी जं० (मुसाफिरखाना); खड़गपुर (नं० १-२); रायपुर [छत्तीसगढ़] (नं० १) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

सन् २००४ द्वितीय संस्करण

मूल्य—विशिष्ट संस्करण—पैंतालीस रुपये

© गीताप्रेस, गोरखपुर

प्रकाशक-मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

'गोबिन्दभवन-कार्यालय' का संस्थान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

साधकका नाम दण्डस्वामी विमलानन्द सरस्वती
बी 3/175. शिवालाघाट, वाराणसी
दूरभाष ~~315019~~ 2277219

* * *

बक्सर का पता:→
श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-आश्रम
बक्सर - विद्युत-शक्ति केन्द्र से आगे →
"बक्सर - चौसा - राजपथ"

※※ गुरु-प्रार्थना एवं वन्दना ※※

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वास्तुदोष-निवारणके उपाय

(१) घरमें वास्तुदोष होनेपर उचित यही है कि उसे यथासम्भव वास्तुशास्त्रके अनुसार ठीक कर ले अथवा उसे बेचकर दूसरा मकान अथवा जमीन खरीद ले।

जहाँतक हो सके, निर्मित मकानमें तोड़-फोड़ नहीं करना चाहिये। तोड़-फोड़ करनेसे वास्तुभङ्गका दोष लगता है। इसलिये वास्तुशास्त्रमें आया है—

जीर्णं गेहं भित्तिभग्नं विशीर्णं तत्पातव्यं स्वर्णनागस्य दन्तैः।
गोशृङ्गैर्वा शिल्पिना निश्चयेन पूजां कृत्वा वास्तुदोषो न तस्य॥

(वास्तुराज० ५।३८)

'घरके पुराना होनेपर, दीवारके गिर जानेपर अथवा छिन्न-भिन्न होनेपर उसे सोनेसे बने हुए नागदन्त (हाथीदाँत) अथवा गोशृङ्ग (गायके सींग)—से वास्तुपूजनपूर्वक गिरवानेसे वास्तुभङ्गका दोष नहीं लगता।'

(२) घरमें अखण्डरूपसे श्रीरामचरितमानसके नौ पाठ करनेसे वास्तुजनित दोष दूर हो जाता है।

(३) घरमें नौ दिनतक अखण्ड भगवन्नाम-कीर्तन करनेसे वास्तुजनित दोषका निवारण हो जाता है।

(४) स्कन्दपुराणमें आया है कि कात्यायन ऋषिने हाटकेश्वर-क्षेत्रमें 'वास्तुपद' नामक तीर्थका निर्माण किया और विश्वकर्माके साथ वहाँ वास्तुपूजन किया। उस तीर्थमें अड़तालीस देवताओंकी पूजा होती है। घरमें जो शिला, कुत्सित पद और कुवास्तुजनित दोष होते हैं, वे उस तीर्थके दर्शनसे मिट जाते हैं। शिल्प आदिकी दृष्टिसे दोषयुक्त और उपद्रवपूर्ण घरको पाकर भी यदि मनुष्य उस तीर्थका संयोग प्राप्त कर ले तो उसी दिनसे उसके घरमें अभ्युदय होने लगता है (स्कन्द०, नागर० १३२)।

[वर्तमानमें इस 'वास्तुपद' तीर्थकी स्थितिके विषयमें हमें जानकारी नहीं मिल सकी। कोई सज्जन जानते हों तो अवगत करानेकी कृपा करें।]

(५) मुख्य द्वारके ऊपर सिन्दूरसे स्वस्तिकका चिह्न बनायें। यह चिह्न नौ अंगुल लम्बा तथा नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिये। घरमें जहाँ-जहाँ वास्तुदोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिह्न बनाया जा सकता है।

स्वस्तिकका चिह्न—卐

॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय। १।

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्। २।

पौष शुक्ल ९, गुरुवार, वि० सं० २०६०, 'दुर्मुखनाम' संवत्सर, शक १९२५, श्रीकृष्ण-सं० ५२२९, JAN. 1 सन् 2004

सूर्यो० ६। ४६

सूर्या० ५। १४

आज गीता जयन्ती मनाई गई। केला लिए ६ रुपये।
दूध १० रुपये .. चीनी ८ रुपये।
किसी के आगमन की आशा नहीं। लालसाहेब [illegible] का आज।
आध्यात्मिक पुस्तकें पढ़ते रहे। "विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्,
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥"
"[illegible] धर्म-रक्षक हैं इति विद्या।" खड़गधारी शर्मा के [illegible]
लिखित आश्रम के निर्माण एवं प्रबंधन में [illegible] [illegible]।

धृतराष्ट्र बोले—हे सञ्जय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्रमें एकत्रित, युद्धकी इच्छावाले मेरे और पाण्डुके पुत्रोंने क्या किया? सञ्जय बोले—उस समय राजा दुर्योधनने व्यूहरचनायुक्त पाण्डवोंकी सेनाको देखकर और द्रोणाचार्यके पास जाकर यह वचन कहा॥ १-२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता। ३।
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः। ४।

सूर्यो० ६। ४६ — भद्रा रात्रिमें ११। १९ बजेसे — सूर्या० ५। १५

आज नवगा-भुवाल बंगाल के उत्साही युवक कृष्ण नवीन और उनके पिता - रामदेव ठाकुर के साथ, श्यामाचरण धर्मशाला में रहते हैं आये। बंगाल का प्रसाद पेड़ा एक डिब्बा ले आये।

x x x

वैद्य शीतल कहते हैं। हैरान [illegible] तथा तिलकुट ले आवेंगे। आज [illegible] नहीं [illegible]। बंगाल से मिथिलेश के भाई विजयानन्द की पत्नी लक्ष्मी और वे दवा के काम में आये। वे अड़कार हैं, स्वयं मेरे सामने नहीं आते, उनके पत्नी बच्चे आकर मिले तथा कुछ देर सत्संग करते हैं।

x x x

तीन वकीलों ने [illegible] पूर्ण दर्शन किया।

पन्द्रह-पन्द्रह तीनों वकीलों तथा [illegible] "गंगाधर दीक्षित" पुरस्कार- प्रमोद कुमार दीक्षित के निमित्त अन्नपूर्णा देवी को दिया।

नवीन

हे आचार्य! आपके बुद्धिमान् शिष्य द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नद्वारा व्यूहाकार खड़ी की हुई पाण्डुपुत्रोंकी इस बड़ी भारी सेनाको देखिये। इस सेनामें बड़े-बड़े धनुषोंवाले तथा युद्धमें भीम और अर्जुनके समान शूरवीर सात्यकि और विराट तथा महारथी राजा द्रुपद, ॥ ३-४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् । पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः । ५
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् । सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः । ६ ।

सूर्यो० ६ । ४६ **भद्रा दिनमें १२ । १६ बजेतक, पुत्रदा एकादशीव्रत** सूर्यो० ५ । १५

आज [illegible] किलो [illegible] पांच [illegible] तथा
[illegible] लिफाफा आया। ५० [illegible] लौटे। बड़ी [illegible] देकर
श्री प्रमोदकुमार [illegible] द्वारा हिमालय [illegible] तथा [illegible]
भी स्वास्थ्य वर्धक औषधालय से मंगाया। पचास रुपये उन्हें दे दिया।
दवा [illegible] भी [illegible] देकर [illegible] मंगाया। तीनों बच्चों
को दो-दो रुपये दिया।
श्री [illegible] पत्नी [illegible]।
[illegible] की पत्नी या उनकी माता [illegible] हुई हैं।

[illegible] में [illegible] किया [illegible] में [illegible]
देकर आलू की भुजिया तथा कुछ खीर और घेवड़ा ग्रहण किया।
श्री रामपुर अयोध्या के लिये चौधरी [illegible] शर्मा के पुत्र श्री
[illegible] महत्वपूर्ण [illegible] "[illegible] भाग २" के
लिये ज्योतिष [illegible] तथा पुस्तक की
[illegible] तथा '[illegible]' सामान्य
इतिहास की संक्षिप्त [illegible] पुस्तक [illegible] के
[illegible] में वेद [illegible]
डाक में [illegible] दिया।
[illegible] दो लिफाफा चार [illegible] तथा
नया [illegible] का [illegible] घेवड़ा तथा [illegible]
मंगाया।

धृष्टकेतु और चेकितान तथा बलवान् काशिराज, पुरुजित्, कुन्तिभोज और मनुष्योंमें श्रेष्ठ शैब्य, पराक्रमी युधामन्यु तथा बलवान् उत्तमौजा, सुभद्रापुत्र अभिमन्यु एवं द्रौपदीके पाँचों पुत्र—ये सभी महारथी हैं॥ ५-६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते। ७।
भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च। ८।

सूर्यो० ६। ४७ **प्रदोषव्रत** सूर्या० ५। १६

आज भी व्रत है, दूध [illegible] मंगाया। दूध [illegible] लिया। पांच रुपये दूध के बाकी हैं - [illegible] ।

हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! अपने पक्षमें भी जो प्रधान हैं, उनको आप समझ लीजिये। आपकी जानकारीके लिये मेरी सेनाके जो-जो सेनापति हैं, उनको बतलाता हूँ। आप—द्रोणाचार्य और पितामह भीष्म तथा कर्ण और संग्रामविजयी कृपाचार्य तथा वैसे ही अश्वत्थामा, विकर्ण और सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा॥ ७-८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः । पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः । १५ ।
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ । १६ ।

सूर्यो० ६ । ४७ 　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　सूर्यां० ५ । १९

मौसम शीत-लहरी-का है फिर भी आज धूप के सहारे
जीवन बीत रहा है। माघ कृ० १ को मैं ८४वें वर्ष में प्रवेश कर रहा।
भुवन-वाणी-ट्रस्ट के 'कृष्णमंदिर' के [illegible] हैं, मुझे [illegible] के
उत्साही तरुण [illegible] की राज० हैं। उन्होंने भी [illegible] के
अभिनंदन - अर्थात् स्वामी रामानंद सरस्वती से स्वामी [illegible] साथ
सरस्वती के वक्ता का इतिहास "[illegible]" के रूप में
छपाए जा रहे हैं। यह प्रसन्नता एवं गौरव की बात है।
पुस्तक १० दिनों में छप जायेगी। मैं भी पिछले [illegible] लगभग
दो हजार वर्ष-प्राचीन [illegible] के काल वाले इतिहास को
लेखन [illegible] के रूप में दो हजार [illegible] देने की कोशिश
कर रहा - बीस [illegible] पहले ही [illegible] कर चुका हूं।
श्री शिवशंकर राम से भी कुछ मदद के लिये संकेत करूंगा।
प्रो० दीनानाथ राय को संकेत किया पर वे मौन ही हैं।

श्रीकृष्ण महाराजने पाञ्चजन्य-नामक, अर्जुनने देवदत्त-नामक और भयानक कर्मवाले भीमसेनने पौण्ड्र-नामकं महाशङ्ख बजाया। कुन्तीपुत्र राजा युधिष्ठिरने अनन्तविजय-नामक और नकुल तथा सहदेवने सुघोष और मणिपुष्पक-नामक शङ्ख बजाये ॥ १५-१६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः । १७ ।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते । सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक् । १८ ।

सूर्यो० ६ । ४७ सूर्या० ५ । २०

आज श्री रामनरेश पाण्डेय सिमरी को पत्र लिखा, श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा सिमरी को भी पत्र लिखा। अक्षत के यज्ञोपवीत पैसे के लिये भी संकेत लिखा।

श्रेष्ठ धनुषवाले काशिराज और महारथी शिखण्डी एवं धृष्टद्युम्न तथा राजा विराट और अजेय सात्यकि, राजा द्रुपद एवं द्रौपदीके पाँचों पुत्र और बड़ी भुजावाले सुभद्रापुत्र अभिमन्यु—इन सभीने, हे राजन्! सब ओरसे अलग-अलग शङ्ख बजाये॥ १७-१८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्। १९।
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः। २०।

सूर्यो० ६। ४७ भद्रा दिनमें ११। ३० बजेसे रात्रिमें ११। ६ बजेतक सूर्यां० ५। २१

डा० स्वामीनाथ तिवारी को जयन्ती-कार्यक्रम के
संबन्ध में नवीन-कार्यक्रम के लिये पत्र।
आज सहरसा एवं सिलीगंज के पते पर श्री सत्यदेव झा,
शर्मा को पत्र- उनके वापसी उत्तर में भेजा गया संकेत।
आज नवीन- अपने घर सुपौल-दरभंगा गये। वे अपने
वंश का परिचय-कुल का समग्र इतिहास जो मैथिली
भाषा- रचना संकलित है, पारिवारिक-दस्तावेजों के माध्यम
से छापने को दे गये- तीन हजार रुपये भी दे दिया।

और उस भयानक शब्दने आकाश और पृथ्वीको भी गुँजाते हुए धार्तराष्ट्रोंके अर्थात् आपके पक्षवालोंके हृदय विदीर्ण कर दिये॥ १९॥ हे राजन्! इसके बाद कपिध्वज अर्जुनने मोर्चा बाँधकर डटे हुए धृतराष्ट्र-सम्बन्धियोंको देखकर, उस शस्त्र चलनेकी तैयारीके समय धनुष उठाकर॥ २०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव। ३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। ३८।

सूर्यो० ६। ४७ सोमप्रदोष सूर्या० ५। २७

आज तिब्बतियों के धर्मगुरु दलाई लामा ने सोमवार प्रातः ... "बज्र-विद्या-संस्थान" में पूजा करने के बाद, संस्थान में आयोजित एक समारोह में संस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रंथों का विमोचन (लोकार्पण) किया तथा लेखकों को 'खाता' प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर धर्मगुरु ने कहा कि भौतिक विकास से आध्यात्मिकता लुप्त हो जायेगी, ऐसा नहीं है। धर्म अंधविश्वास नहीं है। इसका अभिप्राय चित्त की शांति से है। बज्र-विद्या-संस्थान में पूजन करने के बाद लोकचंदन का पौधा लगाया। संस्थान के संस्थापक एवं निदेशक ठेंग रिंग-पो-छे ने धर्मगुरु का परम्परागत ढंग से स्वागत किया। संस्थान-परिसर में सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था की गई थी।

तिब्बती संस्थान में आयोजित समारोह में धर्मगुरु ने कहा कि विज्ञान के साथ-साथ, पाश्चात्य दर्शन का भी अध्ययन किया जाना चाहिये। उन्होंने कहा कि अब पश्चिमी देशों के लोग भी इसे विचारों को स्वीकार करने लगे हैं और मानने लगे हैं कि दर्शन को जीवन में उतारा जा सकता है। बौद्ध दर्शन और विज्ञान दोनों का आधार हेतु प्रत्यय है। वस्तु और चेतना के अध्ययन के लिये एक शोध-केन्द्र की आवश्यकता है। वस्तु के संबंध में हम विज्ञान से बहुत कुछ ले सकते हैं और चेतना के संबंध में उन्हें

अतएव हे माधव! अपने ही बान्धव धृतराष्ट्रके पुत्रोंको मारनेके लिये हम योग्य नहीं हैं; क्योंकि अपने ही कुटुम्बको मारकर हम कैसे सुखी होंगे? यद्यपि लोभसे भ्रष्टचित्त हुए ये लोग कुलके नाशसे उत्पन्न दोषको और मित्रोंसे विरोध करनेमें पापको नहीं देखते॥ ३७-३८॥

बहुत कुछ दे सकते हैं। आधुनिक एवं ज्ञानियों के साथ बौद्ध विद्वानों को विचार-विमर्श करना चाहिये।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन । ३९ ।
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः । धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत । ४० ।

सूर्यो० ६ । ४७ — **भद्रा प्रातः ६ । ४० बजेसे सायं ५ । ३६ बजेतक** — सूर्यां० ५ । २८

→ 'पूर्व पृष्ठ का शेषांश'
समारोह में दलाईलामा काफी प्रसन्न दिखाई दिये।
अपने दो घंटे के व्याख्यान में उन्होंने लोगों को कई बार
हँसाया। उन्होंने कहा कि विगत तीन वर्षों में बौद्ध मठों
में भी विज्ञान का अध्ययन प्रारंभ किया गया है।
धर्मसंघ के संस्थान द्वारा प्रकाशित — स्वामी विमलानन्द
सरस्वती की पुस्तक "बौद्धायन" व डा० ठाकुर [illegible] द्वारा
रचित पुस्तक "धम्मपद" तथा अन्य कई पुस्तकों
का विमोचन किया।

× वकील केजरीवाल के भतीजे अपनी कार से सारनाथ
सम्मानपूर्वक पहुँचाया था तथा पुनः गाड़ी से उनको वापसी
भी मठ में सम्मान पहुँचा दिया।

× अचानक पंकज कुमार [illegible] निरीक्षक आ
गये। वे वाल्मीकि के सजातीय ब्राह्मण हैं। [illegible]
स्वाभिमान रखते हैं। उन्होंने एक सौ एक रुपये पुस्तक के लिये
दिये। सत्येन्द्र कुमार शर्मा - पुत्र - राजेन्द्र राम - मिश्रा स्वर्गीय
पदाधिकारी के क्रम में आये हैं। उन्होंने भी १०१ रुपये स्वेच्छा से
अपनी धर्मपत्नी के माध्यम से दिया।

तो भी हे जनार्दन! कुलके नाशसे उत्पन्न दोषको जाननेवाले हमलोगोंको इस पापसे हटनेके लिये क्यों नहीं विचार करना चाहिये? कुलके नाशसे सनातन कुल-धर्म नष्ट हो जाते हैं, धर्मके नाश हो जानेपर सम्पूर्ण कुलमें पाप भी बहुत फैल जाता है ॥ ३९-४० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः। ४१।
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः। ४२।

सूर्यो० ६। ४७ **मौनी अमावास्या** सूर्यां० ५। २९

आज सायंकाल प्रमोदकुमार दीक्षित - बक्सर से आ गये। रात को खिचड़ी भोजन किया। दो दिनों से सतीश कुमार मल्लिक भी आते हैं। उनसे भी जलपान होता है।

'भुवाल-धारा' के उत्साही नवयुवक राजकृष्ण 'नवीन' दो दिनों से आये हैं। वे श्रद्धापूर्वक सेवा करते रहते हैं। वे भी तिब्बती-उच्च शिक्षा-संस्थान के समारोह में गये थे और सबकुछ देखकर बहुत प्रभावित हुए।

अपनी पुस्तक - 'पाण्डेय कुल दीपिका' - चौरोमान के माध्यम से छाप रही है। यह उनका स्तुत्य कार्य है कि अपने कुल का इतिहास - प्रकाशित कर रहे हैं।

मेरा जिला - भगवान चौधरी - परिवार का इतिहास भी छपने के क्रम में है। तैयार होने से पूरा हुई।

श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा ने चन्दन भी दिया के रूप में हजार रुपये और ... एक हजार - महाशिवरात्रि के अवसर पर दी। तथा - श्री अन्नपूर्णा देवी के पास जमा कर दिया - ... आदि के कामों में।

हे कृष्ण! पापके अधिक बढ़ जानेसे कुलकी स्त्रियाँ अत्यन्त दूषित हो जाती हैं और हे वार्ष्णेय! स्त्रियोंके दूषित हो जानेपर वर्णसङ्कर उत्पन्न होता है। वर्णसङ्कर कुलघातियोंको और कुलको नरकमें ले जानेके लिये ही होता है। लुप्त हुई पिण्ड और जलकी क्रियावाले अर्थात् श्राद्ध और तर्पणसे वञ्चित इनके पितरलोग भी अधोगतिको प्राप्त होते हैं॥ ४१-४२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः। ४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम। ४४।

सूर्यो० ६। ४६ सूर्यां० ५। ३०

आज ईशान शर्मा की "पद्मावत" - एक सांस्कृतिक अध्ययन ! अब वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा रचित को फिर से पुनः एक बार पढ़ना शुरू किया। मैं जो कुछ पढ़ रहा हूँ।

इन वर्णसङ्करकारक दोषोंसे कुलघातियोंके सनातन कुल-धर्म और जाति-धर्म नष्ट हो जाते हैं। हे जनार्दन! जिनका कुल-धर्म नष्ट हो गया है, ऐसे मनुष्योंका अनिश्चित कालतक नरकमें वास होता है, ऐसा हम सुनते आये हैं॥ ४३-४४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः । ४५ ।
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः । धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् । ४६ ।

सूर्यो० ६ । ४६   पंचकारम्भ सायं ६ । २० बजेसे   सूर्यां० ५ । ३०

आज दो लिफाफा मंगाया। दोनों में पत्र लिखा -
एक [illegible] - चन्द्रकेशराम - आरती - [illegible] -
दिल्ली में - डॉ० रामकरण शर्मा एवं पूर्व निदेशक
श्री श्यामनंदन मिश्र से संपर्क करके आगामी महाशिवरात्रि
महाशिवरात्रि - १८ फरवरी को समागत - भारती कार्यक्रम में
उपस्थित होकर उनको उद्बोधित करने के लिये।
साथ ही वीर सावरकर समग्र के दो अप्राप्त भाग
५ खण्ड ७ को - सूचना प्रसारण मंत्रालय से पत्र
भेजने के लिये - डॉ० रामकरण शर्मा द्वारा प्राप्त
दस हजार की पुस्तकें मठ के लिये प्राप्त - मदन को लाने
के संदर्भ में भी लिखा।
दूसरा पत्र गुजरात के महामहिम राज्यपाल
पं० कैलासपति मिश्र को [illegible] में आगामी
राज्यपाल, मध्यप्रदेश तथा पं० विष्णुकांत शास्त्री
को [illegible] अगामी [illegible] समारोह में
पधारने की कृपा की पत्र द्वारा प्रशंसा पाकर
प्रमोद कुमार दीक्षित उनलोगों से संपर्क करेंगे।

हा! शोक! हमलोग बुद्धिमान् होकर भी महान् पाप करनेको तैयार हो गये हैं, जो राज्य और सुखके लोभसे स्वजनोंको मारनेके लिये उद्यत हो गये हैं॥ ४५॥ यदि मुझ शस्त्ररहित एवं सामना न करनेवालेको शस्त्र हाथमें लिये हुए धृतराष्ट्रके पुत्र रणमें मार डालें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सञ्जय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः। १।

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन। २।

अ० २] माघ शुक्ल ४, सं० २०६०, रविवार, JAN. 25. 2004 [दिन २५

सूर्यो० ६। ४५ | वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, भद्रा दिनमें १०। ३६ बजेसे रात्रिमें १०। २५ बजेतक | सूर्यां० ५। ३२

दीक्षा
श्री मुरली राय सपत्नीक - बडुकानुसांव...
श्री उमेश राय "
श्री अखिलेश कु० राय "

श्री अरुण कुमार पाण्डेय सपत्नीक
S/o श्री महेन्द्र कु० पाण्डेय
ग्राम - माधोपुर, पो० - बाँसडीह रोड
बलिया 277203
(उ०प्र०)

सञ्जय बोले—उस प्रकार करुणासे व्याप्त और आँसुओंसे पूर्ण तथा व्याकुल नेत्रोंवाले शोकयुक्त उस अर्जुनके प्रति भगवान् मधुसूदनने यह वचन कहा। श्रीभगवान् बोले—हे अर्जुन! तुझे इस असमयमें यह मोह किस हेतुसे प्राप्त हुआ? क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषोंद्वारा आचरित है, न स्वर्गको देनेवाला है और न कीर्तिको करनेवाला ही है॥ १-२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि । ३३ ।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् । सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । ३४ ।

सूर्यो० ६ । ३६ | **भद्रा दिनमें ९ । ०० बजेसे रात्रिमें ७ । ५७ बजेतक** | सूर्या० ५ । ४६

आज सहसा श्रमजी की एक्समैस मिली - बक्सर उत्तम कचहरी में - नाजिर के पेशकार तिवारी मिले। वे बड़े धूर्त से हैं। बिल का प्रपत्र - फार्म लेकर आया इसका [illegible] और पचास रुपये दिया - पचास और मांगता था, कहा कि आज नहीं दे सकेंगे तो रुपया मिलेगा। [illegible] प्रपत्र की दिया - पचास रु० लेकर लौट गया। बाद में मैं कलक्टर चला गया नहीं विश्राम किया ... [illegible] और कचहरी के [illegible]।

आज सिर्फ श्री रामनरेश पाण्डेय को जयन्ती की व्यवस्था प्रबंध आदि के संबंध में पत्र लिखा। लिफाफे में। प्रमोद कुमार दीक्षित को लिफाफे दे गये थे। दूसरा पत्र डॉ० चन्द्रधर मिश्र को उनके मुजफ्फरपुर के पते पर लिखा - मधु. तथा बेगूसराय साहित्य स्वर्ग डॉ रामस्वरूप शर्मा के पते पर उनके कहीं विदेश जाने के पते के संबंध में।

आज रात को देर से दूरभाष से सूचना मिली कि रेवतीपुर के श्री चन्द्रशेखर [illegible] आपकी उपस्थिति में श्री चन्द्रशेखर के पिता - [illegible] पार्थिव शरीर [illegible] हो गये। वे भी मेरे शिष्य थे। पं० शीतलबहादुर शर्मा के माध्यम से।

किन्तु यदि तू इस धर्मयुक्त युद्धको नहीं करेगा तो स्वधर्म और कीर्तिको खोकर पापको प्राप्त होगा। तथा सब लोग तेरी बहुत कालतक रहनेवाली अपकीर्तिका भी कथन करेंगे और माननीय पुरुषके लिये अपकीर्ति मरणसे भी बढ़कर है ॥ ३३-३४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः । येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । ३५ ।
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् । ३६ ।

सूर्यो० ६ । ३५ — कुम्भ-संक्रान्ति दिनमें ३ । ४५ बजे, श्रीजानकी-जयन्ती — सूर्यां० ५ । ४६

आज [illegible] भी पैसा नहीं पा सके । [illegible] कहीं
से कुछ [illegible] शर्मा जी [illegible] । शाम को [illegible]
[illegible] दूध पीया । [illegible]
[illegible] पानी पड़ता रहा ।
इसी तरह कपड़ा बदलकर दूध-[illegible] किया ।
[illegible] किया । [illegible] कपड़े
पड़े । [illegible] भी [illegible]
[illegible] मिश्र के [illegible]
डाक में [illegible] ।

* * *

और जिनकी दृष्टिमें तू पहले बहुत सम्मानित होकर अब लघुताको प्राप्त होगा, वे महारथीलोग तुझे भयके कारण युद्धसे हटा हुआ मानेंगे। तेरे वैरीलोग तेरे सामर्थ्यकी निन्दा करते हुए तुझे बहुत-से न कहने योग्य वचन भी कहेंगे; उससे अधिक दुःख और क्या होगा? ॥ ३५-३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् । तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः । ३७ ।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ । ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि । ३८ ।

सूर्यो० ६ । ३५ सूर्या० ५ । ४७

आज खड़ा-खड़ा कचहरी पहुँचे। नाजिर से
पत्र लगा किया। पैंतीस सौ रुपये प्राप्त हुए।
पाँच सौ रुपये श्री खड्गधारी बाबा को - आश्रम की रंगाई सफाई
के मद में दिया। दो सौ मुन्ना द्वारा - अपनी भौजाई को
राज बहादुर राय की धर्मपत्नी को दिया।
मेरा विचार है कि उन पैसों से एक कमरा "चौधरी राय बहादुर राय - अतिथि-निवास" के नाम से बनवा दूँ। यह उनकी स्मृति के
रूप में रहेगा और एक इतिहास भी बना रहेगा कि
चौधरी परिवार का आश्रम में क्या योगदान रहा। यह काम मैं
अपनी सर्वेक्षण-योजना के मद से करूँगा।
यह प्राचीन मकान है इसमें तरह-तरह के बखेड़े हैं। पर इसे
ध्यान देकर करना ही पड़ेगा।
रुपया लाकर प्रमोद के जिम्मे दे दिया। डाक दे
मैनेजर गया जी-अन्नपूर्णा आदि को लिख दिया। बीज-प्रमोद गया के
पास भेज कर दिया कि वे आवश्यक मद में खर्च करें।

——— x ——— x ———

बेनीपुर - श्री राजेन्द्र शर्मा - विजय के चाचा के परिवार के साथ
एक युवक चक्र अधिकारी हैं। अपनी माता के साथ दवा को आए
और फिर वापस चले गये। कुछ तीस रु० लिये। पत्र लिखना दिया और
पाँच-पाँच मैनेजर गया जी को दो पोस्टकार्ड मँगाया।

या तो तू युद्धमें मारा जाकर स्वर्गको प्राप्त होगा अथवा संग्राममें जीतकर पृथ्वीका राज्य भोगेगा। इस कारण हे अर्जुन! तू युद्धके लिये निश्चय करके खड़ा हो जा॥ ३७॥ जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुःखको समान समझकर, उसके बाद युद्धके लिये तैयार हो जा; इस प्रकार युद्ध करनेसे तू पापको नहीं प्राप्त होगा॥ ३८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि। ३९।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। ४०।

सूर्यो० ६। ३४ — भद्रा दिनमें १। ७ बजेसे रात्रिमें ११। ५६ बजेतक — सूर्यो० ५। ४८

आज प्रातः नवीन 'वैद्यनाथ धाम' [illegible] में आये [illegible]
भोजन। व ज्योतिष के कहने पर वकील पहुँचे।
श्री प्रमोदकुमार दीक्षित.. मुजफ्फरपुर - इन्द्रजीत शर्मा के यहाँ
गये। कुछ पुस्तक हैं।
इलाहाबाद टेलीफोन से 'इन्द्रजीत शर्मा' जयन्ती समारोह
के अध्यक्ष होंगे तथा [illegible] उनका [illegible]
आरती [illegible] चन्द्र [illegible] करेंगे।
बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों का [illegible] ठीक नहीं।
वे अपना राजनीति [illegible] करते लगते हैं।
श्री केशवानंद परमहंस - अस्पताल से - मुक्त हो गये। [illegible]
वे कहा कि उनको [illegible] कोई [illegible]
उन्हें राजगुरु मठ में ले चले।
श्री [illegible] - साहित्यकार के [illegible] जयन्ती [illegible]
नामकी कविता की प्रतिलिपि दे गये। २८ [illegible]
रखे हैं.. मैं उस [illegible] में [illegible] हूँ।
[illegible] के माध्यम से कोई उपाय नहीं
[illegible] - [illegible]
50- [illegible]

हे पार्थ! यह बुद्धि तेरे लिये ज्ञानयोगके विषयमें कही गयी और अब तू इसको कर्मयोगके विषयमें सुन—जिस बुद्धिसे युक्त हुआ तू कर्मोंके बन्धनको भलीभाँति त्याग देगा अर्थात् सर्वथा नष्ट कर डालेगा॥ ३९॥ इस कर्मयोगमें आरम्भका अर्थात् बीजका नाश नहीं है और उलटा फलरूप दोष भी नहीं है, बल्कि इस कर्मयोगरूप धर्मका थोड़ा-सा भी साधन जन्म-मृत्युरूप महान् भयसे रक्षा कर लेता है॥ ४०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।४१।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।४२।

सूर्यो० ६।३३ विजया एकादशीव्रत सूर्या० ५।४९

"हुमायू के ऊपर शेरशाह की विजय
२६ जून १५३९ई" → शेरपुर के "नगरी नगाब"
होने का संकेत- जहाँ भिश्ती चमड़े का थैला लेकर
नगर की नालियों को धोकर शुद्ध कर रहा था।
गंगा की यह नई धारा फूट रही थी- मूल धारा
सोनाड़ी-चाँदपुर होकर आगे जाती थी। सोनाड़ी के
गंगहद में चाँदपुर के पूरब- कम लेवल मिट्टी काटते
समय नाव के कई टुकड़े तथा जंगलंगा नाव का
एक बड़ा लंगर मिला था।
सैदपुर भीतरी में भी स्कंदगुप्त के एक लेख में शक-
कुशानों को देश से बाहर करने की चर्चा है। यह
कार्य वहाँ वैद्य वीर ब्राह्मणों ने किया अतः उस जनपदीय
स्थान को भगवान-ब्राह्मणिक केन्द्र कहा गया। वीरपुर
पतेमा के बीच नाला से पश्चिम कई जगह गुप्तकालीन
पाषाण मूर्तियों के खंड तथा कुछ खंडित अभिलेख-
गुप्त ब्राह्मी लिपि में मिले हैं। सहमोडीह से
सोनाड़ी से शेरपुर की ओर मुड़ी गंगा के तट से
बाट के निकट आ रही थी- गुप्तकालीन अभिलेख
की बड़ी शिला पाँच-छः फुट ऊँची एक डेढ़ फुट चौड़ी
पानी काटती- विष्णु पाद-या विष्णु मंदिर के दरवाजे

हे अर्जुन! इस कर्मयोगमें निश्चयात्मिका बुद्धि एक ही होती है; किन्तु अस्थिर विचारवाले विवेकहीन सकाम मनुष्योंकी बुद्धियाँ निश्चय ही बहुत भेदोंवाली और अनन्त होती हैं॥४१॥ हे अर्जुन! जो भोगोंमें तन्मय हो रहे हैं, जो कर्मफलके प्रशंसक वेदवाक्योंमें ही प्रीति रखते हैं, जिनकी बुद्धिमें स्वर्ग ही परम प्राप्य वस्तु है और जो स्वर्गसे बढ़कर दूसरी कोई वस्तु ही नहीं है—ऐसा कहनेवाले हैं, वे अविवेकीजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति। ४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते। ४४।

सूर्यो० ६। ३२ सूर्या० ५। ४१

रखीपी - जैसे नासमझी से अंग्रेजों ने खुदरा गांधी पढ़ा-रगड़कर चौपट कर डाला। अर्थात् धूमिल और आडम्बर है।

इस प्रकारकी जिस पुष्पित अर्थात् दिखाऊ शोभायुक्त वाणीको कहा करते हैं जो कि जन्मरूप कर्मफल देनेवाली एवं भोग तथा ऐश्वर्यकी प्राप्तिके लिये नाना प्रकारकी बहुत-सी क्रियाओंका वर्णन करनेवाली है॥ ४२-४३॥ उस वाणीद्वारा जिनका चित्त हर लिया गया है, जो भोग और ऐश्वर्यमें अत्यन्त आसक्त हैं; उन पुरुषोंकी परमात्मामें निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती॥ ४४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥ ४५॥
यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः॥ ४६॥

सूर्यो० ६। ३१ | प्रदोषव्रत, महाशिवरात्रिव्रत, भद्रा सायं ५। ३१ बजेसे रात्रिशेष ४। ४३ बजेतक | सूर्या० ५। ५०

आज आश्रम पर महाशिवरात्रि का पर्व
विधिवत् समारोह हुआ। ब्रह्मचारी जी स्वामी शिवेन्द्र
सरस्वती स्वामी मनीषानन्द आदि आये।
पढ़ने वालों में श्री सच्चिदानन्द [illegible]। [illegible]
स्वामी [illegible] - भोजन [illegible] भी आ गये।
प्रातः से ही वेदपाठ - शिवालय से [illegible]
[illegible] भी आ गये - किसी प्रकार [illegible] और प्रमोद जी
के कहने पर - समारोह का प्रसाद - स्वामी पहुँचाकर
[illegible] - [illegible] - [illegible]
साधु लोग भी [illegible] गये। केवल मनीषानन्द
भोजन में [illegible]।
मैं प्रमोद के साथ [illegible] चला गया - वहाँ
विश्राम किया... [illegible] प्रातः [illegible] का [illegible]
है।
× श्री रामचन्द्र पाण्डेय - शिवकान्त पाण्डेय [illegible] और
[illegible] पाण्डेय - गोपाल आदि के साथ आ भी
गये थे।
आज से श्री लक्ष्मीनारायण [illegible] अधिवक्ता देवरिया
के श्री कृष्ण कुमार [illegible] अधिवक्ता आदि भी आये - [illegible]
[illegible] एवं [illegible]

हे अर्जुन! वेद उपर्युक्त प्रकारसे तीनों गुणोंके कार्यरूप समस्त भोगों एवं उनके साधनोंका प्रतिपादन करनेवाले हैं; इसलिये तू उन भोगों एवं उनके साधनोंमें आसक्तिहीन, हर्ष-शोकादि द्वन्द्वोंसे रहित, नित्यवस्तु परमात्मामें स्थित योग-क्षेमको न चाहनेवाला और स्वाधीन अन्तःकरणवाला हो॥ ४५॥ सब ओरसे परिपूर्ण जलाशयके प्राप्त हो जानेपर छोटे जलाशयमें मनुष्यका जितना प्रयोजन रहता है, ब्रह्मको तत्त्वसे जाननेवाले ब्राह्मणका समस्त वेदोंमें उतना ही प्रयोजन रह जाता है॥ ४६॥

आरती में [illegible] तथा [illegible] [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि । ४७ ।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते । ४८ ।

सूर्यो० ६ । ३० — पंचकारम्भ रात्रिमें २ । १० बजेसे — सूर्या० ५ । ५०

।बुद्धि का शोध॥

श्री [illegible] समाचार मिला [illegible]। [illegible] नहीं [illegible] भी कभी [illegible] नहीं पहुँच सकेंगे।

× × ×

प्रातः [illegible] से प्रमोद शुक्ला के साथ काशी आ गये। [illegible] [illegible] भी [illegible] आ गये। प्रमोद शुक्ला को लेकर प्रयाग चले गये। [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] पूरी [illegible] चुके हैं।

तेरा कर्म करनेमें ही अधिकार है, उसके फलोंमें कभी नहीं। इसलिये तू कर्मोंके फलका हेतु मत हो तथा ते[illegible]न करनेमें भी आसक्ति न हो॥ ४७॥ हे धनञ्जय! तू आसक्तिको त्यागकर तथा [illegible]र असिद्धिमें समान बुद्धिवाला होकर योगमें स्थित हुआ कर्तव्यकर्मोंको कर, स[illegible] योग कहलाता है॥ ४८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते। ५९।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः। ६०।

सूर्यो० ६। २६ सिमरी के रामबरेन्द्र पाण्डेय सूर्यां० ५। ५५

श्री पण्डित हैं धार्मिक आचार्य. वेदज्ञ [illegible]

श्री विभूतिनारायण राय अमोल पुत्र - विनोद शर्मा तथा बड़े पुत्र
श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा. या श्री [illegible]नाथ शर्मा - जो इंजीनियर [illegible] हैं
आ पहुँचे। वे लोग रात दस बजे के आने पर आज रात
मैं यहीं विश्राम किया. [illegible] के विचार [illegible]
[illegible] के विचार से देखने समझने आये थे। इनकी
बड़ी [illegible] मिले। प्रातः [illegible]। उपेन्द्रनाथ [illegible]
संजीव [illegible] में दारोगा हैं।

इन्द्रियोंके द्वारा विषयोंको ग्रहण न करनेवाले पुरुषके भी केवल विषय तो निवृत्त हो जाते हैं, परन्तु उनमें रहनेवाली आसक्ति निवृत्त नहीं होती। इस स्थितप्रज्ञ पुरुषकी तो आसक्ति भी परमात्माका साक्षात्कार करके निवृत्त हो जाती है। हे अर्जुन! आसक्तिका नाश न होनेके कारण ये प्रमथनस्वभाववाली इन्द्रियाँ यत्न करते हुए बुद्धिमान् पुरुषके मनको भी बलात् हर लेती हैं॥ ५९-६०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः। वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। ६१।
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते। ६२।

सूर्यो० ६। २५ सहसा वीथी खुदीके श्री राम कृपाल ठाकुर सूर्यो० ५। ५६

आये। साथमे इनके लड़का सतीन्द्र था भाई था।
श्री [illegible] भाई था, अमित तिवारी मास्टर के भाई किसी
रोगी को दिखाना इच्छा था। रातभरके विश्राम किया
प्रातः कानपुर के वही राम भी आ मिले।

इनके भाई श्री विजयनारायण राम का पुत्र
आँखकी के चिकित्सार्थ भर्ती है।

× × ×

श्री प्रमोदकुमार दीक्षित आज सहसा मिलनेके।
श्री रामधन पाण्डेय का पैगाम। [illegible] के - [illegible]
[illegible] के बाद आ पहुँचे। [illegible] के [illegible]
के मानकी

इसलिये साधकको चाहिये कि वह उन सम्पूर्ण इन्द्रियोंको वशमें करके समाहितचित्त हुआ मेरे परायण होकर ध्यानमें बैठे, क्योंकि जिस पुरुषकी इन्द्रियाँ वशमें होती हैं, उसीकी बुद्धि स्थिर हो जाती है॥ ६१॥ विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषकी उन विषयोंमें आसक्ति हो जाती है, आसक्तिसे उन विषयोंकी कामना उत्पन्न होती है और कामनामें विघ्न पड़नेसे क्रोध उत्पन्न होता है॥ ६२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति। ६३।
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति। ६४।

सूर्यो० ६। २४ भद्रा सायं ६। ५४ बजेसे सूर्या० ५। ५६

प्रात: [illegible] स्नान। [illegible] और
[illegible] की [illegible] नगर स्थिति [illegible]
देखकर चकित है।

[illegible]
उनका [illegible] आवागमन [illegible]
जाती है। [illegible] की बात कहकर कि [illegible]
नहीं।
प्रभाव [illegible] श्री कृष्ण [illegible]

क्रोधसे अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़भावसे स्मृतिमें भ्रम हो जाता है, स्मृतिमें भ्रम हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्तिका नाश हो जाता है और बुद्धिका नाश हो जानेसे यह पुरुष अपनी स्थितिसे गिर जाता है। परंतु अपने अधीन किये हुए अन्तःकरणवाला साधक अपने वशमें की हुई, राग-द्वेषसे रहित इन्द्रियोंद्वारा विषयोंमें विचरण करता हुआ अन्तःकरणकी प्रसन्नताको प्राप्त होता है॥ ६३-६४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति। ७२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

सूर्यो० ६। १८ **प्रदोषव्रत** सूर्या० ५। ५९

आज दो पत्र लिखा। एक भाई साहब [illegible]
जीजी को दिया। दूसरा पत्र [illegible] जी [illegible] करते जा रहे।
आज पं० सुरेन्द्र शर्मा - बहुत दिनों के बाद मिले उनसे
गीता के [illegible] तथा अध्यात्म में [illegible]
और कुछ बोध प्राप्त हुआ। स्वामी [illegible]
जी के आगमन की सूचना मिली।
कल्याण का [illegible] पढ़ रहे हैं।

हे अर्जुन! यह ब्रह्मको प्राप्त हुए पुरुषकी स्थिति है, इसको प्राप्त होकर योगी कभी मोहित नहीं होता और अन्तकालमें भी इस ब्राह्मी स्थितिमें स्थित होकर ब्रह्मानन्दको प्राप्त हो जाता है ॥ ७२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

सूर्यो० ६।१४   वसन्तोत्सव, होली   सूर्या० ६।१

आज श्री चन्द्रशेखर राय, आरक्षी - अधिक्षक
[illegible] राजपाल [illegible] में विस्तृत पत्र लिखा तथा
दिल्ली में [illegible] श्री अनन्त [illegible] [illegible]
उन के निवास पर रक्खी. उनको [illegible] के लिये दी गई
आठ हजार की पुस्तकों को लाने के लिये भी लिखा
जो पूर्व में रक्खी हैं और उनका आदेश है कि स्वामी जी
का कोई दूत आवे तो पुस्तकें दे दी जावें।

निःसन्देह कोई भी मनुष्य किसी भी कालमें क्षणमात्र भी बिना कर्म किये नहीं रहता; क्योंकि सारा मनुष्यसमुदाय प्रकृतिजनित गुणोंद्वारा परवश हुआ कर्म करनेके लिये बाध्य किया जाता है॥५॥ जो मूढ़बुद्धि मनुष्य समस्त इन्द्रियोंको हठपूर्वक ऊपरसे रोककर मनसे उन इन्द्रियोंके विषयोंका चिन्तन करता रहता है, वह मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते । १७ ।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः । १८ ।

सूर्यो० ६ । ८ सूर्यां० ६ । ४

आज चन्द्रदीपराम - [illegible] को
"देवात्मा दिव्यविभूति" तथा [illegible] दृष्टि
के मूर्तिमान स्वरूप - स्वामी पूर्णानन्द जी
की जीवन-गाथा तथा "कृष्णायन"
काव्य - श्रीमद्भागवत की कथा का
लौकिक स्वरूप - पाठ करने के लिये
प्रदान किया गया तथा [illegible]
के लिये [illegible] [illegible]।

परन्तु जो मनुष्य आत्मामें ही रमण करनेवाला और आत्मामें ही तृप्त तथा आत्मामें ही सन्तुष्ट हो, उसके लिये कोई कर्तव्य नहीं है॥ १७॥ उस महापुरुषका इस विश्वमें न तो कर्म करनेसे कोई प्रयोजन रहता है और न कर्मोंके न करनेसे ही कोई प्रयोजन रहता है। तथा सम्पूर्ण प्राणियोंमें भी इसका किञ्चिन्मात्र भी स्वार्थका सम्बन्ध नहीं रहता॥ १८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते। ३१।
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः। ३२।

सूर्यो० ५।७ .... भद्रा दिनमें ६। ३४ बजेसे रात्रिमें ७। ६ बजेतक .... सूर्या० ६। ३८

" भूमि [illegible] [illegible] [illegible] /
[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] - [illegible]
से [illegible] [illegible] [illegible] हैं।
× × ×
इन [illegible], अपना-अपना [illegible]
[illegible] [illegible]। ×

॥ उद्धरेदात्मनात्मानं। नात्मानमवसादयेत् ॥ गीता
× × ×

॥ आत्मानं रथिनं विद्धि। शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि। मनः प्रग्रहमेव च ॥
इन्द्रियाणि हयानाहुः। विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥
— कठोपनिषद्।

जो पुरुष एकीभावमें स्थित होकर सम्पूर्ण भूतोंमें आत्मरूपसे स्थित मुझ सच्चिदानन्दघन वासुदेवको भजता है, वह योगी सब प्रकारसे बरतता हुआ भी मुझमें ही बरतता है। हे अर्जुन! जो योगी अपनी भाँति सम्पूर्ण भूतोंमें सम देखता है और सुख अथवा दुःखको भी सबमें सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है॥ ३१-३२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन । एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्। ३३।

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्। ३४।

सूर्यो० ५।७ सूर्या० ६।३९

"प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकार विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥"

× × ×

"जड़ चेतनहिं ग्रंथि पड़ गई
यद्यपि मृषा छूटत कठिनई॥

छोरत ग्रंथि जानि खगराया।
विघ्न अनेक करइ तब माया॥
जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई
सो कैवल्य परम पद लहई॥" – मानस

× × ×

मैं अरु मोर तोर तैं माया।
जेहि बस कीन्हे जीव निकाया॥

गो गोचर जहँ लगि मन जाई।
सो सब माया जानेहु भाई॥"

मा - अर्थात् नहीं या - तात्पर्य - जो
जिसकी केवल प्रातिभासिक सत्ता है परमार्थिक नहीं॥

अर्जुन बोले—हे मधुसूदन! जो यह योग आपने समभावसे कहा है, मनके चञ्चल होनेसे मैं इसकी नित्य स्थितिको नहीं देखता हूँ। क्योंकि हे श्रीकृष्ण! यह मन बड़ा चञ्चल, प्रमथन स्वभाववाला, बड़ा दृढ़ और बलवान् है। इसलिये उसका वशमें करना मैं वायुको रोकनेकी भाँति अत्यन्त दुष्कर मानता हूँ॥ ३३-३४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः। प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः। ३०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

सूर्यो० ५।२ आज · [illegible] -जल्लाद में रहने वाले सूर्यो० ६।४१

डा० [illegible] पाण्डेय - [illegible]

[illegible]

[illegible] तथा

[illegible] में [illegible]

श्री [illegible]

की [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] अंग्रेजी में प्रकाशित

[illegible]

दो पुस्तकें ① Arctic Home in the Vedas

② Orion - Researches into the Antiquity of the Vedas के [illegible]

[illegible]

[illegible]

जो पुरुष अधिभूत और अधिदैवके सहित तथा अधियज्ञके सहित (सबका आत्मरूप) मुझे अन्तकालमें भी जानते हैं, वे युक्तचित्तवाले पुरुष मुझे जानते हैं अर्थात् प्राप्त हो जाते हैं ॥ ३० ॥

[illegible]

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये। ११।
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च । मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्। १२।

सूर्यो० ५। २ भद्रा दिनमें ९। २३ बजेतक सूर्यां० ६। ५२

वेदके जाननेवाले विद्वान् जिस सच्चिदानन्दघनरूप परमपदको अविनाशी कहते हैं, आसक्तिरहित यत्नशील संन्यासी महात्माजन जिसमें प्रवेश करते हैं और जिस परमपदको चाहनेवाले ब्रह्मचारी लोग ब्रह्मचर्यका आचरण करते हैं, उस परमपदको मैं तेरे लिये संक्षेपसे कहूँगा॥ ११॥ सब इन्द्रियोंके द्वारोंको रोककर तथा मनको हृद्देशमें स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मनके द्वारा प्राणको मस्तकमें स्थापित करके, परमात्मसम्बन्धी योगधारणामें स्थित होकर॥ १२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-3

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् । यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् । १३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः । तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः । १४।

सूर्यो० ५ । ३ अमावास्या सूर्या० ६ । ५२

जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षररूप ब्रह्मको उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्मका चिन्तन करता हुआ शरीरको त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगतिको प्राप्त होता है। हे अर्जुन! जो पुरुष मुझमें अनन्य-चित्त होकर सदा ही निरन्तर मुझ पुरुषोत्तमको स्मरण करता है, उस नित्य-निरन्तर मुझमें युक्त हुए योगीके लिये मैं सुलभ हूँ, अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूँ॥ १३-१४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[illegible]

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः । १५ ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते । १६ ।

सूर्यो० ५ । ३ [illegible] सूर्या० ६ । ५३

[illegible]

परम सिद्धिको प्राप्त महात्माजन मुझको प्राप्त होकर दुःखोंके घर एवं क्षणभङ्गुर पुनर्जन्मको नहीं प्राप्त होते। हे अर्जुन! ब्रह्मलोकपर्यन्त सब लोक पुनरावर्ती हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र! मुझको प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता; क्योंकि मैं कालातीत हूँ और ये सब ब्रह्मादिके लोक कालके द्वारा सीमित होनेसे अनित्य हैं॥ १५-१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम। २१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्। २२।

सूर्यो० ५। ३ —— **भद्रा सायं ६। २० बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत** —— सूर्या० ६। ५३

पिपरी एवं समहुता = रोहतानके शिष्योंकी पूजा —

१०८३ श्रीकृष्णराय
०२०० " राजगृही राय
०२८५ " गोपाल राय
०१११ " मदन राय धोती 1
०८२१ " परशु राय
०११० भीष्म राय
०१०१ राजकेश्वर "
००१० मदन राय
००५१ " सत्येन्द्र " धोती 1
००२० " नन्दकिशोर "
००६०५ " सीताराम "
००५६ " दरस राय धोती 1
०१५० " लालबहादुर
११५० " नगीना राय
११५० " श्रीनिवास राय
३० कालिका पाण्डेय
३० " लक्ष्मीनारायण राय
१० " बाला राय पिपरा
५० " जनेश्वर राय
२४८३/=

समहुता
(१) श्रीनिवासराय ४११
४०kg चावल ५० गेहूं
२ साड़ी
(२) कामेश्वर राय १५१.
३५kg गेहूं ४ धोती 1
(३) केदार नाथ राय ८४०
(४) राजकेश्वर राय ८२
१ धोती + 1 साड़ी
कु० = १४८४

जो अव्यक्त 'अक्षर' इस नामसे कहा गया है, उसी अक्षर नामक अव्यक्तभावको परमगति कहते हैं तथा जिस सनातन अव्यक्तभावको प्राप्त होकर मनुष्य वापस नहीं आते, वह मेरा परम धाम है। हे पार्थ! जिस परमात्माके अन्तर्गत सर्वभूत हैं और जिस सच्चिदानन्दघन परमात्मासे यह समस्त जगत् परिपूर्ण है, वह सनातन अव्यक्त परम पुरुष तो अनन्य भक्तिसे ही प्राप्त होनेयोग्य है॥ २१-२२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्। १५।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्। १६।

सूर्यो० ५। ६ ······ भद्रा प्रातः ५। ३४ बजेतक, पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा, श्रीव्यास-पूजा ······ सूर्या० ६। ५४

आज गुरुपूर्णिमा थी, [illegible]

[illegible]

दूसरे ज्ञानयोगी मुझ निर्गुण-निराकार ब्रह्मका ज्ञानयज्ञके द्वारा अभिन्नभावसे पूजन करते हुए भी मेरी उपासना करते हैं और दूसरे मनुष्य बहुत प्रकारसे स्थित मुझ विराट्स्वरूप परमेश्वरकी पृथक्-भावसे उपासना करते हैं। क्रतु मैं हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, ओषधि मैं हूँ, मन्त्र मैं हूँ, घृत मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवनरूप क्रिया भी मैं ही हूँ॥ १५-१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः । वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च। १७।
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् । प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्। १८।

सूर्यो० ५। ७ स्वामी [illegible] [illegible] [illegible] सूर्या० ६। ५४

श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

x [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

१२ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

श्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] २०० [illegible], [illegible]

[illegible] १७ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]। दो लिफाफा-दो [illegible] [illegible]।

इस सम्पूर्ण जगत्का धाता अर्थात् धारण करनेवाला एवं कर्मोंके फलको देनेवाला, पिता, माता, पितामह, जाननेयोग्य, पवित्र ओङ्कार तथा ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद भी मैं ही हूँ। प्राप्त होनेयोग्य परम धाम, भरण-पोषण करनेवाला, सबका स्वामी, शुभाशुभका देखनेवाला, सबका वासस्थान, शरण लेनेयोग्य, प्रत्युपकार न चाहकर हित करनेवाला, सबकी उत्पत्ति-प्रलयका हेतु, स्थितिका आधार, निधान और अविनाशी कारण भी मैं ही हूँ॥ १७-१८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च। अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन। १९।
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते। ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्। २०।

सूर्यो० ५। ७ .... भद्रा रात्रिमें १०। ३६ बजेसे .... सूर्या० ६। ५४

आज ... [illegible]
[illegible] नवम्बर ... [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मैं ही सूर्यरूपसे तपता हूँ, वर्षाका आकर्षण करता हूँ और उसे बरसाता हूँ। हे अर्जुन! मैं ही अमृत और मृत्यु हूँ और सत्-असत् भी मैं ही हूँ। तीनों वेदोंमें विधान किये हुए सकामकर्मोंको करनेवाले, सोमरसको पीनेवाले, पापरहित पुरुष मुझको यज्ञोंके द्वारा पूजकर स्वर्गकी प्राप्ति चाहते हैं, वे पुरुष अपने पुण्योंके फलरूप स्वर्गलोकको प्राप्त होकर स्वर्गमें दिव्य देवताओंके भोगोंको भोगते हैं॥ १९-२०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते । २१ ।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् । २२ ।

सूर्यो० ५ । ७ — भद्रा दिनमें ९ । ३५ बजेतक, श्रावण सोमवारव्रत, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, पंचकारम्भ सायं ५ । ४९ बजे — सूर्या० ६ । ५४

आज- राधेश्याम शर्मा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] काम कर रहे हैं।
[illegible]
[illegible]
के यहाँ से लौटे [illegible] दाखिल करा गये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वे उस विशाल स्वर्गलोकको भोगकर पुण्य क्षीण होनेपर मृत्युलोकको प्राप्त होते हैं। इस प्रकार स्वर्गके साधनरूप तीनों वेदोंमें कहे हुए सकामकर्मका आश्रय लेनेवाले और भोगोंकी कामनावाले पुरुष बार-बार आवागमनको प्राप्त होते हैं, अर्थात् पुण्यके प्रभावसे स्वर्गमें जाते हैं और पुण्य क्षीण होनेपर मृत्युलोकमें आते हैं। जो अनन्यप्रेमी भक्तजन मुझ परमेश्वरको निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्कामभावसे भजते हैं, उन नित्य-निरन्तर मेरा चिन्तन करनेवाले पुरुषोंका योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर देता हूँ॥ २१-२२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्। २३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च। न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते। २४।

सूर्यो० ५।८ सूर्यां० ६।५४

कल्लू ठीकेदार को बुलाकर प्रमोदकुमार अग्रवाल
ने [illegible] भी मध्यान्ह का [illegible]। [illegible]
है। [illegible] रखा गया है। [illegible]
[illegible] - [illegible]।

[illegible]
[illegible] माता पिता [illegible]
[illegible]
[illegible]।
[illegible] इसी से उनकी माता एवं [illegible]
[illegible]
[illegible]।

श्री प्रमोदकुमार अग्रवाल [illegible]
की पूजा कर रहे हैं [illegible]
[illegible] करते रहते हैं।
[illegible], श्री [illegible]
[illegible]
[illegible]।
[illegible] भी रहे हैं। [illegible]
[illegible] रहे हैं। [illegible]
[illegible]।

हे अर्जुन! यद्यपि श्रद्धासे युक्त जो सकाम भक्त दूसरे देवताओंको पूजते हैं, वे भी मुझको ही पूजते हैं; किन्तु उनका वह पूजन अविधिपूर्वक अर्थात् अज्ञानपूर्वक है। क्योंकि सम्पूर्ण यज्ञोंका भोक्ता और स्वामी भी मैं ही हूँ; परन्तु वे मुझ परमेश्वरको तत्त्वसे नहीं जानते, इसीसे गिरते हैं अर्थात् पुनर्जन्मको प्राप्त होते हैं॥ २३-२४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्। २५।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः। २६।

सूर्यो० ५।८ सूर्यां० ६।५४

आधा किलो मधु [illegible] [illegible]

२५० ग्राम [illegible] [illegible] मँगाया।
[illegible] [illegible] लिखवाया।

विजय [illegible] [illegible]। आठ पाव दूध [illegible] की सेवई तथा
आठ [illegible] की चीनी मँगाया। बच्चों [illegible] लिये।
दो। [illegible] [illegible] मँगाया। [illegible] मैत्रेयी को
दिया।

देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं, पितरोंको पूजनेवाले पितरोंको प्राप्त होते हैं, भूतोंको पूजनेवाले भूतोंको प्राप्त होते हैं और मेरा पूजन करनेवाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं। इसलिये मेरे भक्तोंका पुनर्जन्म नहीं होता। जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेमसे पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्धबुद्धि निष्काम प्रेमी भक्तका प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र-पुष्पादि मैं सगुणरूपसे प्रकट होकर प्रीतिसहित खाता हूँ॥ २५-२६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्। २७।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः। सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि। २८।

सूर्यो० ५। ९ भद्रा प्रातः ५। २७ बजेसे सायं ५। ११ बजेतक सूर्या० ६। ५४

आज श्री रामगोपाल पाण्डेय भूतपूर्व प्रोफेसर, [illegible] को पत्र लिखा। डा० रामकिशन शर्मा, [illegible] दिल्ली को - [illegible] दी गई [illegible] मूल्य की किताबें नहीं प्राप्त होने [illegible] पत्र भेजा।

हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर। इस प्रकार, जिसमें समस्त कर्म मुझ भगवान्‌के अर्पण होते हैं—ऐसे संन्यासयोगसे युक्त चित्तवाला तू शुभाशुभ फलरूप कर्मबन्धनसे मुक्त हो जायगा और उनसे मुक्त होकर मुझको ही प्राप्त होगा॥ २७-२८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा। अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। ३३।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः। ३४।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

सूर्यो० ५।१० — भद्रा सायं ५।४८ बजेसे — सूर्या० ६।५४

आज [illegible] से बक्सर पहुँचा। प्रमोद जी
उन्हें श्री [illegible] राम [illegible] के घर पर पहुँचाया - [illegible]
अपनी गीता [illegible] की [illegible] पुस्तक [illegible] किसी व्यक्ति
को जो [illegible] था उसका पत्र प्राप्त होने से।
वह [illegible] सद्भाव की प्रतिष्ठा है। उसे धन्यवाद। [illegible]
[illegible] के पास से उन्हें मोटरसाइकिल से बक्सर पहुँचा दिया।
[illegible] किया। रात को केवल दूध पीकर रहे।

फिर इसमें तो कहना ही क्या है, जो पुण्यशील ब्राह्मण तथा राजर्षि भक्तजन मेरी शरण होकर परमगतिको प्राप्त होते हैं। इसलिये तू सुखरहित और क्षणभङ्गुर इस मनुष्य-शरीरको प्राप्त होकर निरन्तर मेरा ही भजन कर। मुझमें मनवाला हो, मेरा भक्त बन, मेरा पूजन करनेवाला हो, मुझको प्रणाम कर। इस प्रकार आत्माको मुझमें नियुक्त करके मेरे परायण होकर तू मुझको ही प्राप्त होगा॥ ३३-३४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः । यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया। १।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः । २।

१९४ दिन] शुद्ध श्रावण कृष्ण १०, सं० २०६१, सोमवार, JULY 12. 2004 [गीता

सूर्यो० ५। १० — भद्रा प्रातः ६। २७ बजेतक, श्रावण सोमवारव्रत — सूर्यां० ६। ५३

आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गये [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
ने [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
हैं [illegible] [illegible] [illegible] हैं । [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बड़े [illegible] । [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] गया । [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] । ३० [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
उन्होंने कहा [illegible] [illegible] हैं, [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]
में [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible]
जाना होगा ।

श्रीभगवान् बोले—हे महाबाहो! फिर भी मेरे परम रहस्य और प्रभावयुक्त वचनको सुन, जिसे मैं तुझ अतिशय प्रेम रखनेवालेके लिये हितकी इच्छासे कहूँगा। मेरी उत्पत्तिको अर्थात् लीलासे प्रकट होनेको न देवतालोग जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं; क्योंकि मैं सब प्रकारसे देवताओंका और महर्षियोंका भी आदिकारण हूँ॥ १-२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । ३ ।
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च । ४ ।

सूर्यो० ५ । ११ **कामदा एकादशीव्रत** सूर्या० ६ । ५३

आज एकादशी व्रत है। १० रुपये का १०० [illegible]
[illegible] दो रुपये का [illegible] नहीं। दो [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

जो मुझको अजन्मा अर्थात् वास्तवमें जन्मरहित, अनादि और लोकोंका महान् ईश्वर तत्त्वसे जानता है, वह मनुष्योंमें ज्ञानवान् पुरुष सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त हो जाता है। निश्चय करनेकी शक्ति, यथार्थ ज्ञान, असम्मूढता, क्षमा, सत्य, इन्द्रियोंका वशमें करना, मनका निग्रह तथा सुख-दुःख, उत्पत्ति-प्रलय और भय-अभय ॥ ३-४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः । ५ ।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः । ६ ।

सूर्यो० ५ । ११ **प्रदोषव्रत** सूर्यां० ६ । ५३

आज आप के [illegible]
[illegible] उद्घाटित [illegible] ।

[illegible]
[illegible] - भोजपुरी
महाकाव्य की [illegible]
[illegible] - पाँच [illegible]
[illegible]
[illegible] २४ [illegible]

१० [illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
हो चुका है।

तथा अहिंसा, समता, सन्तोष, तप, दान, कीर्ति और अपकीर्ति—ऐसे ये प्राणियोंके नाना प्रकारके भाव मुझसे ही होते हैं। सात महर्षिजन, चार उनसे भी पूर्वमें होनेवाले सनकादि तथा स्वायम्भुव आदि चौदह मनु—ये मुझमें भाववाले सब-के-सब मेरे संकल्पसे उत्पन्न हुए हैं, जिनकी संसारमें यह सम्पूर्ण प्रजा है ॥ ५-६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः। ७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते । इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः। ८।

सूर्यो० ५। १२ .... भद्रा दिनमें ११। ३९ बजेसे रात्रिमें १२। ३९ बजेतक .... सूर्यां० ६। ५३

आज बीजीपुर - सुरियावाँ इण्टर के श्री जगदीशनारायण शर्मा 'अचिन्त्य' साहब के पौत्र ... मनोजकुमार शर्मा - जो यहीं पर बनारस [illegible] में रहते हैं अपनी पत्नी सहित आये ... पं. [illegible] संगीत [illegible] दीक्षित से [illegible] आदि के सम्बन्ध में विचार विमर्श करते रहे। [illegible] [illegible] ... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। यह [illegible] [illegible] [illegible]।

जो पुरुष मेरी इस परमैश्वर्यरूप विभूतिको और योगशक्तिको तत्त्वसे जानता है, वह निश्चल भक्तियोगसे युक्त हो जाता है—इसमें कुछ भी संशय नहीं है। मैं वासुदेव ही सम्पूर्ण जगत्‌की उत्पत्तिका कारण हूँ और मुझसे ही सब जगत् चेष्टा करता है, इस प्रकार समझकर श्रद्धा और भक्तिसे युक्त बुद्धिमान् भक्तजन मुझ परमेश्वरको ही निरन्तर भजते हैं॥ ७-८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा । असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे। १३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव । न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः। १४।

सूर्यो० ५। १३ **पुरुषोत्तममास प्रारम्भ** सूर्यां० ६। ५२

राष्ट्रपति के [illegible] के लिये [illegible] व्यास के
अभिषेक [illegible] द्वारा प्रस्तुत हुआ है। [illegible]
श्रेष्ठ व्यास पहुँचा है; और [illegible] द्वारा अभिव्यक्त
ग्रन्थ" : की सूचना से [illegible] हुआ।
प्रयोग का नमूना दिखा है। [illegible] नहीं, [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] कि
[illegible] में [illegible] कर देंगे। [illegible]
आगे बढ़े।

वैसे ही देवर्षि नारद तथा असित और देवल ऋषि तथा महर्षि व्यास भी कहते हैं और आप भी मेरे प्रति कहते हैं॥ १३॥ हे केशव! जो कुछ भी मेरे प्रति आप कहते हैं, इस सबको मैं सत्य मानता हूँ। हे भगवन्! आपके लीलामय स्वरूपको न तो दानव जानते हैं और न देवता ही॥ १४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम । भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते। १५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः । याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि। १६।

सूर्यो० ५। १४ — **श्रावण सोमवारव्रत** — सूर्यां० ६। ५१

आज नागेन्द्र मिश्र, मुजफ्फरपुर तथा सिमरा के श्री केदारनाथ [illegible] [illegible] को दो कार्डों पर अलग अलग पत्र लिखा।

हे भूतोंको उत्पन्न करनेवाले! हे भूतोंके ईश्वर! हे देवोंके देव! हे जगत्के स्वामी! हे पुरुषोत्तम! आप स्वयं ही अपनेसे अपनेको जानते हैं। इसलिये आप ही उन अपनी दिव्य विभूतियोंको सम्पूर्णतासे कहनेमें समर्थ हैं, जिन विभूतियोंके द्वारा आप इन सब लोकोंको व्याप्त करके स्थित हैं॥ १५-१६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्। २३।
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः। २४।

सूर्यो० ५। १६ ······ सूर्यां० ६। ४९

आज राजस्थान- श्रीमती [illegible]। अन्य संस्थान- [illegible] की [illegible] में पत्र भेजकर इनकी उदारता की प्रशंसा [illegible] का धन्यवाद किया तथा कुछ अन्य रचनायें मंगाने की सदिच्छा प्रकट की। [illegible] को भी [illegible] भेजे गये हैं। उन्होंने २५०५) पूजा [illegible] में दिये। उन्होंने [illegible] दो [illegible] मंगाया [illegible] भेजने को किया। [illegible] दिया। सावित्री को [illegible] दिया [illegible] में लिखा पत्र नहीं गया - उसे भी [illegible] है।

मैं एकादश रुद्रोंमें शङ्कर हूँ और यक्ष तथा राक्षसोंमें धनका स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओंमें अग्नि हूँ और शिखरवाले पर्वतोंमें सुमेरु पर्वत हूँ। पुरोहितोंमें मुखिया बृहस्पति मुझको जान। हे पार्थ! मैं सेनापतियोंमें स्कन्द और जलाशयोंमें समुद्र हूँ॥ २३-२४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्। २७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः। २८।

सूर्यो० ५। १७ श्री [illegible] राम श्री [illegible] सूर्या० ६। ४८

और [illegible] । [illegible]
[illegible] किया।
[illegible] राजनीतिज्ञके [illegible] आवश्यक [illegible] से [illegible]
प्रश्नों को [illegible] दिनों से रहते हैं।
[illegible] " [illegible] "
[illegible]
कुछ और [illegible] मानने के लिये आवश्यक [illegible]
रखना उचित है।

घोड़ोंमें अमृतके साथ उत्पन्न होनेवाला उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा, श्रेष्ठ हाथियोंमें ऐरावत नामक हाथी और मनुष्योंमें राजा मुझको जान। मैं शस्त्रोंमें वज्र और गौओंमें कामधेनु हूँ। शास्त्रोक्त रीतिसे सन्तानकी उत्पत्तिका हेतु कामदेव हूँ और सर्पोंमें सर्पराज वासुकि हूँ॥ २७-२८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् । झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी । ३१ ।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन । अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् । ३२ ।

सूर्यो० ५ । १८ | भद्रा रात्रिमें १० । १४ बजेसे | सूर्या० ६ । ४७

आज · यूनियन बैंक · भेलूपुर के खाते में - [illegible]
[illegible] के [illegible] - [illegible] जो [illegible]
[illegible] · [illegible] · से · [illegible]
जायेगे । [illegible] के लिये [illegible]
[illegible] । [illegible] - [illegible] के [illegible]
[illegible] भी [illegible] के लिये [illegible] । [illegible] अपनी
[illegible] और [illegible] के लिये
[illegible] समर्पित किया।
गाँव में [illegible] राय के पौत्र - [illegible]
पिता [illegible] राय, पितामह [illegible] राय [illegible]
हैं। [illegible] - [illegible]
[illegible] · व [illegible] भी [illegible] ।

मैं पवित्र करनेवालोंमें वायु और शस्त्रधारियोंमें श्रीराम हूँ तथा मछलियोंमें मगर हूँ और नदियोंमें श्रीभागीरथी गङ्गाजी हूँ। हे अर्जुन! सृष्टियोंका आदि और अन्त तथा मध्य भी मैं ही हूँ। मैं विद्याओंमें अध्यात्मविद्या अर्थात् ब्रह्मविद्या और परस्पर विवाद करनेवालोंका तत्त्व-निर्णयके लिये किया जानेवाला वाद हूँ॥ ३१-३२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् । मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः । ३५ ।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् । ३६ ।

सूर्यो० ५ । १९ — प्रदोषव्रत — सूर्या० ६ । ४६

आज राजकीय [illegible] पाल जी ने [illegible] बैठक में आया। श्रीनिवास जोशी, बहोड़, अलाका- राजस्थान के पत्रिका। पिपरी के प्राध्यापक रामजी राय को पत्र लिखा उन्ध पुस्तकें भी भेजेगा अनुरोध किया जिसमें "ब्राह्मण-विवेक" तथा आरम्भिक एवं [illegible] की चर्चा की है। उनसे अपने महाकाव्य 'कुसुमाकर' के प्रकाशन के संबंध में भी [illegible] का सन्दिग्ध किया।

तथा गायन करनेयोग्य श्रुतियोंमें मैं बृहत्साम और छन्दोंमें गायत्री छन्द हूँ तथा महीनोंमें मार्गशीर्ष और ऋतुओंमें वसन्त मैं हूँ। मैं छल करनेवालोंमें जूआ और प्रभावशाली पुरुषोंका प्रभाव हूँ। मैं जीतनेवालोंका विजय हूँ, निश्चय करनेवालोंका निश्चय और सात्त्विक पुरुषोंका सात्त्विक भाव हूँ॥ ३५-३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः । मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः । ३७ ।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् । मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् । ३८ ।

सूर्यो० ५ । १९ भद्रा रात्रिमें १ । ४१ बजेसे सूर्या० ६ । ४५

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] – [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
के [illegible] [illegible] किया । [illegible] [illegible] [illegible] के
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] संस्कृत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] आग्रह किया ।

वृष्णिवंशियोंमें वासुदेव अर्थात् मैं स्वयं तेरा सखा, पाण्डवोंमें धनञ्जय अर्थात् तू, मुनियोंमें वेदव्यास और कवियोंमें शुक्राचार्य कवि भी मैं ही हूँ। मैं दमन करनेवालोंका दण्ड अर्थात् दमन करनेकी शक्ति हूँ, जीतनेकी इच्छावालोंकी नीति हूँ, गुप्त रखनेयोग्य भावोंका रक्षक मौन हूँ और ज्ञानवानोंका तत्त्वज्ञान मैं ही हूँ॥ ३७-३८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्। ९।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्। अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्। १०।

सूर्यो० ५। २३ | पंचक समाप्त दिनमें १। १५ बजे, भद्रा दिनमें ४। ३६ बजेसे रात्रिशेष ४। ५० बजेतक | सूर्यां० ६। ४१

आज पिपरा के श्री [illegible]प्रसाद – पूर्व [illegible] मठ में
आये थे। उनसे बहुत विचार-चर्चा हुई। [illegible]
संध्याके [illegible]-प्रमोद [illegible] एवं उनके पुत्र आये [illegible]
[illegible] वापस आयेंगे। [illegible] शर्मा [illegible]
भी [illegible] एवं [illegible]
[illegible] गया।

सञ्जय बोले—हे राजन्! महायोगेश्वर और सब पापोंके नाश करनेवाले भगवान्ने इस प्रकार कहकर उसके पश्चात् अर्जुनको परम ऐश्वर्ययुक्त दिव्यस्वरूप दिखलाया। अनेक मुख और नेत्रोंसे युक्त, अनेक अद्भुत दर्शनोंवाले, बहुत-से दिव्य भूषणोंसे युक्त और बहुत-से दिव्य शस्त्रोंको हाथोंमें उठाये हुए, ॥ ९-१० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् । ११ ।
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः । १२ ।

सूर्यो० ५ । २४ सूर्यां० ६ । ४०

आज प्रतापगढ़ जिले के नदी-मानिकपुर के कुछ
यात्री अग्नि-[illegible] धाम के प्रकाश में थे [illegible]
[illegible] संबोधित थे। वे भी [illegible]
पं. [illegible] की [illegible] रहे थे। [illegible] रुपये पुस्तकालय में [illegible]
आज १२ रुपये में [illegible] - गंगा [illegible] तथा [illegible]
[illegible] मंगाया [illegible]।

दिव्य माला और वस्त्रोंको धारण किये हुए और दिव्य गन्धका सारे शरीरमें लेप किये हुए, सब प्रकारके आश्चर्योंसे युक्त, सीमारहित और सब ओर मुख किये हुए विराट्स्वरूप परमदेव परमेश्वरको अर्जुनने देखा। आकाशमें हजार सूर्योंके एक साथ उदय होनेसे उत्पन्न जो प्रकाश हो, वह भी उस विश्वरूप परमात्माके प्रकाशके सदृश कदाचित् ही हो ॥ ११-१२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा । अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा। १३।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः । प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत। १४।

सूर्यो० ५। २४ [illegible] सूर्यां० ६। ४०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पाण्डुपुत्र अर्जुनने उस समय अनेक प्रकारसे विभक्त अर्थात् पृथक्-पृथक् सम्पूर्ण जगत्को देवोंके देव श्रीकृष्णभगवान्के उस शरीरमें एक जगह स्थित देखा। उसके अनन्तर वे आश्चर्यसे चकित और पुलकितशरीर अर्जुन प्रकाशमय विश्वरूप परमात्माको श्रद्धा-भक्ति-सहित सिरसे प्रणाम करके हाथ जोड़कर बोले— ॥ १३-१४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।१८।

सूर्यो० ५। २६ सूर्यो० ६। ३६

आज प्रमोद कुमार दीक्षित पं- सुरेश्वर शर्मा के [illegible] आये- रुद्राभिषेक कार्यक्रम की [illegible] में चढ़ गये।
आज तीन पत्र- श्री रघुनाथ शर्मा-कानपुर, श्री [illegible] गुप्ता- सोमेश्वरनाथ मंगलम् पीतम -लखनऊ [illegible] भी राजेन्द्र प्रसाद [illegible] को लिख दिया गया। तीनों पत्र पोस्टकार्ड पर लिखे गये।

आप ही जाननेयोग्य परम अक्षर अर्थात् परब्रह्म परमात्मा हैं, आप ही इस जगत्के परम आश्रय हैं, आप ही अनादि धर्मके रक्षक हैं और आप ही अविनाशी सनातन पुरुष हैं। ऐसा मेरा मत है॥ १८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।१९।

सूर्यो० ५। २७ **भद्रा रात्रिमें ३। १३ बजेसे, प्रदोषव्रत** सूर्या० ६। ३५

आज वरुणके तिवारी लोगों को भी मूर्धन्य तिवारी के माध्यम से पोस्टकार्ड एक पत्र लिख दिया। सुशील तिवारी समाजीत तिवारी, लोकजीत तिवारी आदि सबको पत्रमें उन्हें ध्यान किया।

आपको आदि, अन्त और मध्यसे रहित, अनन्त सामर्थ्यसे युक्त, अनन्त भुजावाले, चन्द्र-सूर्यरूप नेत्रोंवाले, प्रज्वलित अग्निरूप मुखवाले और अपने तेजसे इस जगत्‌को संतप्त करते हुए देखता हूँ॥ १९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास। २५।

सूर्यो० ५। २९ ---------- भद्रा सायं ६। ३७ बजेसे, वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत ---------- सूर्यां० ६। ३०

आज· महाराज [illegible] एवं [illegible] द्वारा
[illegible] मंगवाए· [illegible] में [illegible]
[illegible]
[illegible]

दाढ़ोंके कारण विकराल और प्रलयकालकी अग्निके समान प्रज्वलित आपके मुखोंको देखकर मैं दिशाओंको नहीं जानता हूँ और सुख भी नहीं पाता हूँ। इसलिये हे देवेश! हे जगन्निवास! आप प्रसन्न हों॥ २५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अ० ११] शुद्ध श्रावण शुक्ल ४, सं० २०६१, शुक्रवार, AUG. 20. 2004 [दिन २३३

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः। २६।

सूर्यो० ५। ३० — भद्रा प्रातः ६। २७ बजेतक, नागपञ्चमी — सूर्यां० ६। २९

आज डॉ॰ [illegible] मिश्र [illegible] उनके [illegible]
विवाह [illegible] सिफारिशमें एक पत्र लिखा।
मेरा [illegible] को पुस्तकमें लेकर [illegible]
है। उनका व्याख्यान करते हुए। श्री [illegible] राय के
लिये एवं लोगोंके गृहस्थाश्रम के लिये - [illegible]

[illegible] सर्वोत्तम [illegible]
सहित निर्धारित कर रहे हैं।

वे सभी धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओंके समुदायसहित आपमें प्रवेश कर रहे हैं और भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य तथा वह कर्ण और हमारे पक्षके भी प्रधान योद्धाओंके सहित सब-के-सब ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः।
तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः। २९।

सूर्यो० ५। ३१ | भद्रा दिनमें १२। ३९ बजेतक, श्रावण सोमवारव्रत | सूर्या० ६। २६

आज श्री विवेकानंदराम-वीरपुर के - महामृत्युञ्जय-
जप" → अनुष्ठान की पूर्णाहुति थी। धूम-धाम से
संगीत सफल हुआ। अनेक लोग-संबंधी, पुत्र एवं स्वयं
उपस्थित थे। दो घंटे तक हवन-पूजन होता रहा। कभी-कभी
वृष्टि, कभी धूप-यह प्राकृतिक-आँख-मिचौनी चलती
रही। [illegible] फल-फूल केला [illegible] दही बड़े पूड़ी तरकारी
दूध की खीर-पायस आदि, सबको अतिथियों ने भोजन
किया। पंडित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
स्वामी [illegible] [illegible], श्री [illegible] शर्मा, [illegible]
[illegible] - [illegible] - [illegible] [illegible] श्री [illegible] [illegible]
आकर सम्मिलित हुए। संयोगवश - [illegible] [illegible]
के पं० [illegible] [illegible] [illegible] भी आ पहुँचा वह भी समारोह
में सम्मिलित हुआ। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] हुए। सायंकाल [illegible] [illegible] - [illegible]।
डा० [illegible] [illegible] - [illegible] गाजीपुर से आ
[illegible], वे भी शामिल हुए और अपने [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] - अपने
[illegible] [illegible] [illegible]।

जैसे पतङ्ग मोहवश नष्ट होनेके लिये प्रज्वलित अग्निमें अतिवेगसे दौड़ते हुए प्रवेश करते हैं, वैसे ही ये सब लोग भी अपने नाशके लिये आपके मुखोंमें अतिवेगसे दौड़ते हुए प्रवेश कर रहे हैं॥ २९॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः। ३२।

सूर्यो० ५। ३३ — भद्रा दिनमें ४। १९ बजेतक, पुत्रदा एकादशीव्रत — सूर्यां० ६। २३

आज एकादशी व्रत: शैलाइ के श्री मातादीन शर्मा आये.
उनके लड़के का नामांकन - डी० ए० वी० कॉलेज में हुआ है, व अम्मा विवाह की तलाश में हैं. मैंने उन्हें परिस्थिति बताई तथा प्रमोदकुमार दीक्षित के प्रबंध-अधिकार की बात कही। बहुधा के संबंध की चिट्ठी की भी चर्चा हुई। मिथिलेश के भाई-श्री विजयनारायण का संबंध शैलाइ की श्री हृदयनारायण राय के यहाँ होने की भी चर्चा हुई।

उन्होंने भी श्री मिथिलेश के दुर्व्यवहार की भर्त्सना तथा मिथिलेश के लेन-देन पर बात करने को कहा की। सिंघाड़ा का हलवा तथा आलू का साग लिया। दो लिफाफे मंगाए। श्री हरेराम शर्मा पत्र देकर भी लिखी तथा फल आदि नहीं ला सके। रात में अतः दूध ही ग्रहण किया।

श्रीभगवान् बोले—मैं लोकोंका नाश करनेवाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय इन लोकोंको नष्ट करनेके लिये प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिये जो प्रतिपक्षियोंकी सेनामें स्थित योद्धा लोग हैं वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे अर्थात् तेरे युद्ध न करनेपर भी इन सबका नाश हो जायगा॥ ३२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः। ३६।

सूर्यो० ५। ३५ | पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, श्रावणी कर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), श्रावण सोमवारव्रत | सूर्या० ६। १९

आज दो पत्र- अखिल भारत- श्री ओंकार [illegible] शर्मा-
प्रयाग श्री सच्चिदानन्द शर्मा [illegible] सम्पर्क [illegible] का नहीं
भेजते थे। पता नहीं कौन है कौन नहीं है।
दूसरा पत्र [illegible] के [illegible] सिंह- [illegible] सिंह [illegible]
वे लोग [illegible] में दीक्षित [illegible]। [illegible] स्वामी देवानंद [illegible]
[illegible] वहीं [illegible] लोगों ने [illegible]।
मैंने इनको [illegible] की एक प्रति तथा [illegible]
की एक प्रति भेजी थी। संबंध जारी रखने के लिये पत्र भेजना
आवश्यक समझा।

तीसरा पत्र- चतुर्वेदी के [illegible] कॉलेज के
[illegible] पत्रिका के [illegible] हैं। [illegible]
[illegible]। [illegible] वहीं [illegible]
से [illegible]। श्री [illegible] मिश्र [illegible]
में - [illegible] तहसीलदार [illegible] सिंह [illegible]
[illegible] हुए थे। उन्हें [illegible]
किन्तु [illegible] में भी [illegible] बड़ा और [illegible]।
[illegible]
[illegible] रुपया
[illegible] बैंक में [illegible]

अर्जुन बोले—हे अन्तर्यामिन्! यह योग्य ही है कि आपके नाम, गुण और प्रभावके कीर्तनसे जगत् अति हर्षित हो रहा है और अनुरागको भी प्राप्त हो रहा है तथा भयभीत राक्षसलोग दिशाओंमें भाग रहे हैं और सब सिद्धगणोंके समुदाय नमस्कार कर रहे हैं ॥ ३६ ॥

[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।

सूर्यो० ५।३७ — सूर्यां० ६।१४

आज डिप्टी अग. सम - श्री [illegible] एवं
श्री विश्वानन्द राय तथा उन्हीं लोगों के द्वारा --
वार्षिक पद के अवकाश प्राप्त - डी.एम. अपने भतीजे
श्री शारदा प्रसाद राय के भी पत्र लिखा।
पी.एस.यु के - श्री हृदयानन्द ठाकुर की अपनी इच्छा
के अनुसार श्री हीरेश प्रकाश कामावेशा संतान [illegible]
मंग के सवालात प्रस्तुत आदि के संबंध में विधिवत
औपचारिक पत्र लिखकर उन्हें समझाया तथा कहा कि
वे सभी नीतिगत रीति से अपना वांछित अनुभव पायें।

हे अनन्त सामर्थ्यवाले! आपके लिये आगेसे और पीछेसे भी नमस्कार! हे सर्वात्मन्! आपके लिये सब ओरसे ही नमस्कार हो। क्योंकि अनन्त पराक्रमशाली आप समस्त संसारको व्याप्त किये हुए हैं, इससे आप ही सर्वरूप हैं॥४०॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

(1) श्री नरेन्द्र जी एवं जगत्स्वामी[illegible] तिवारी
विजय-निकेतन,
राष्ट्रीय-स्वयं सेवक संघ-कार्यालय
राजेन्द्रनगर-पटना
पथ संख्या- 6.E

* (1) पंकज कुमार, उप निरीक्षक
L.I.U./C.I.D आफिस
श्री नगर कॉलोनी-
पो० लहरतारा, वाराणसी.

(2) पंकज-कुमार
क्वार्टर नं० 2170
सेक्टर 12-D
बोकारो- स्टील- सिटी बोकारो.

(3) श्री रामजी राय; प्राध्यापक,
शान्तिनगर- कॉलोनी, बहरोड़
जिला - अलवर - राजस्थान

(4) श्री हरेकृष्ण पाण्डेय, बी, 43
सैटेलाइट- कॉलोनी; राँची
पो० धुर्वा- राँची-4

(5) श्री कन्हैयालाल चौधरी
ग्रा० पो० मधमाधपुर- शिवदयाल टोला
पो० रन्नूचक- मकनपुर
जि० भागलपुर- बिहार.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

(6) डा० रामतवक्या शर्मा;
पूर्व हिन्दी-विभागाध्यक्ष,
पटना-विश्वविद्यालय
'बड़ाई-भवन'
मैन- कंकड़-बाग रोड;
राजेन्द्र नगर गुमटी के पश्चिम.

× × ×

(7) डा० चन्द्रेश्वर मिश्र,
केन्द्रीय-कारा-अधीक्षक
एस० के० मेडिकल-कॉलेज के दक्षिण.
मुजफ्फरपुर.
पो. डा० रामकृष्ण मिश्र
मुजफ्फरपुर-१०३३७६

(8) श्री कृष्ण कुमार शर्मा. अधिवक्ता
श्री वंशीशरण-लॉज
आरा-स्टेशन-परिसर- उत्तर-पश्चिम
पो० एच०डी० जैन कॉलेज.
आरा; भोजपुर.

(9) डा० रामतवक्या शर्मा घर का पता

डा० रामतवक्या शर्मा.
ग्राम० – चॉंद-पुनपुन.
पो० नेवारी थाना- मखदुमपुर
जहानाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

(10) R. P. Singh, Advocate
20, Kedia Chamber
C.V. Road.
Malad West.
Mumbai - 64.

(11) श्री इन्द्रजीत शर्मा; राजकुमार शर्मा,
मकान नं० 26/33-A;
मीरपुर-बसही
फाज० नं० 250/692. P.R

CPL Rai A.K. (TCR)
No. 65 a MAF
C/o 56 APO

स्वामी रामानन्द परहंस गुरु - स्वामी आत्मानन्दजी म०
स्वतंत्र परमहंस आश्रम कोड़ारी (बड़लगंज) गोरखपुर
डा० ब्रह्मदीन पाण्डेय (सी० एम० ओ०) फोन = 2468791
23 A, अमरनाथ झा रोड, जार्जटाउन - इलाहाबाद

राजकुमार
डा० श्री नागेश्वर प्रसाद शर्मा. Ph. no
IMA Hall Road 0612/2321112 (R)
सालिमपुर अहरा, कदमकुआँ. 2322179 (R)
पटना - 800003. 9431062674 (mob)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

Lal Narayan Sharma
Budha Colony Patna
Tribhuan kunj
(Near Shree kunj Apt).
Ph. No - 2520231 (0612).

Hareesh Kumar Gi
office of The A.D.G.
C.I.D. Raja Rani Building
Doranda Ranchi Jharkhand.
94313-62688

विनोद कुमार पाण्डेय
(बिहार) (खगड़िया)
ओवरसियर [illegible]
06323
246247

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

ब्रह्मचारी निगमानन्द सरस्वती गौरा
(वाया आरा गंज)
जि० भोजपुर (बिहार)

श्री सत्य नारायण पाण्डेय
ग्रा० पो० करनौल
जि० आजमगढ़
राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्साधिकारी

डा० ओमप्रकाश तिवारी (मेडिकल आफिसर)
जैप-2, टांटी सिल्वे - रांची (झारखण्ड)
(दूरभाष) 9431361798 मोबाइल
श्रीमती अंजुना कश्यप D/o डा० ओ०पी० तिवारी (दू. News
पति श्री मंगेश कश्यप दूरभाष-011=26117271 TV.
मोबाइल 9899632336 (डिप्टी पुलिस कमिश्नर)
निवासी - जमालपुर (दिल्ली पुलिस)

- वंशीधर त्रिपाठी
N-4 A-5 हनुमानधाम
18, करौंदी, सुसुवाही
वाराणसी - 221005

दूरभाष = 2575824

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

श्री संजय तिवारी यातायात लेखा कार्यालय
दक्षता अनुभाग
बलदेवपुर रेलवे कालोनी उत्तर-मध्य रेलवे
निवास — C/o अमरावती मिश्रा, 191/23 ए
60 फिट रोड राजरूपपुर — इलाहाबाद
मोबाइल 9839255042

× × ×

"आवश्यक-सूचना"

(9)

श्री बद्रीनारायण-धाम में, ब्रह्मकपाली नामक स्थान पर: कोई स्वयं में पितरों को पिण्डदान करने से गया में पितृ-श्राद्ध नहीं करना पड़ता।

× × ×

जो व्यक्ति विरक्त होकर गुरु से महावाक्य-दीक्षा ले लेते हैं। उसे देहावसान होने पर मुखाग्नि नहीं दी जाती, जल समाधि होती है और सोलह कुमारी ब्रह्मचारी पुरुषों को भोजन कराए जाते हैं। अंतःकरण खड़ाऊँ, छड़ी की मोक्ष आदि दे दी जाती है। मिट्टी के कपड़े भी काष्ठ में दे दिये जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection